International Journal of Applied Research 2020; 6(7): 43-45

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(7): 43-45
www.allresearchjournal.com
Received: 24-05-2020
Accepted: 26-06-2020

शम्भू पासवान
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
शम्भू पासवान
शोधार्थी, हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. उषा किरण खान के कथा–साहित्य में वर्णित समाज

शम्भू पासवान

सार
समाज ही मानवता–श्रृंगार का मूल है, लेकिन मानवता की दृष्टि साहित्योत्थान कई कारणों से अवरूद्ध, होने के कारण मानवीय व्यक्तित्व की विकृत्तियाँ परवान चढ़ चुकी हैं। कथाकार उषाकिरण खान की कहानियों, उपन्यासों, नाटकों में अनेक वैचारिक या सारांश प्रस्तुत है। उपन्यास 'गई झुलनी टूट' में ग्रामीण लोक के बनते–बिगड़ते, सम्बन्ध, नारी–मन की व्यथा और पंचायती राज के ताने–बाने का रेखांकन है। 'भामती' में मिथिला के लोकजीवन, इतिहास, क्षेत्रीय विशेषताओं, सामाजिक राजनीतिक–जीवन के साथ ही सम्पूर्ण सांस्कृतिक विरासत को उद्घाटित करती है। 'सिरजनहार' में विद्यापति के जीवन–संघर्ष और जीवन–द्वन्द्व की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। 'फागुन के बाद' उपन्यास में मौसम में बदलापव के साथ मानवीय जीवन के बदलते घटनाक्रम को विस्तृत और वैचारिक आग्रह के साथ प्रस्तुत किया है। 'मौसम का दर्द' कहानी में नायिका का स्वाभाविक–जीवन–दर्शन, प्रत्याख्यान प्रकृति के आलम्बन पर ही निर्मित है। 'कहाँ गये मेरे उगना' नाटक में मैथिल समाज के जनश्रुतियों का हिस्सा है। मिथिला की संस्कृति में 'उगना' भगवान शिव का पर्याय है, जिसकी खोज इस नाटक में विद्यापति करते हैं। 'हीरा डोम' प्रसिद्ध नाटकों में से एक है। यह भी अनुभूतिजन्य सच्चाई का ही प्रतिबिम्ब है।

कूट शब्दः समाज, सांस्कृतिक, मानवता–श्रृंगार का मूल, नारी–मन, राजनीतिक–जीवन

प्रस्तावना
लेखक जब तक लेखक है, केवल दर्शाता है, करता नहीं। जब करने लगता है, तो उसकी क्रिया ही काव्य और कथा बन जाती है। कथा–साहित्य की पूरी प्रक्रिया को उषाकिरण खान के साहित्य–कर्म के अध्ययन से समझा जा सकता है। वैयक्तिक अनुभूतियों का सामाजिक अनुभूतियों में रूपान्तर है। रूपान्तर की यह प्रक्रिया कई स्तरों से होकर गुजरती है, जिसमें लेखक साहित्य–कर्म के लिए विषय–वस्तु का चयन करता है। उषा–कथा–साहित्य विविध समाजों का वह खजाना है, जिसके आधार पर पूर्णतः मानवतावादी समाज को पुनर्स्थापना की जा सकती है। उषाकिरण खान जिस समाज की बात करती है अपने कथा साहित्य में, गुलाम भारतीय–समाज से लेकर आजाद भारतीय समाज का तुलनात्मक अध्ययन करने का स्थान सहज सुलभ हो जाता है। नागार्जुन से लेकर रेणु की परम्परा को आगे बढ़ाती हुई महादेवी वर्मा तक, स्त्री–शक्ति को दिखाने का काम की है। स्त्री होकर स्त्री की बात ही नहीं करती, बल्कि उन समाज के स्त्री की बात लिखती है, जिसको समाज अभी भी पर्दा में रखने का काम करती है। महादेवी के बाद पहली महिला है, जिसको 'भारत–भारती सम्मान' से सम्मानित किया गया है। इनके कथा'–साहित्य में ग्रामीण स्त्रियाँ भी अपनी आवाज उठाती हुई नअर आती हैं। सबसे बड़ी बात है कि अंचल विशेष की कथा लिखने वाली पहली महिला लेखिका है, जिन्होंने कोशी के कच्छार से लेकर शहरी जीवन तक की स्थिति–परिस्थिति और समाज के प्रवृत्ति को लिख रही है।

डॉ. उषा किरण खान के कथा–साहित्य में वर्णित समाज
मानवता का ताज है समाज। मनुष्यता की लाज है– समाज परिवर्त्तन के पंखों से संयुक्त दिव्य प्रेम का परवाज है– समाज। इसकी संस्थापना ही मनुष्यता मात्र के रक्षार्थ की गयी, लेकिन जैसा कल था, वैसा नहीं है– आज का समाज। कल का समाज था–प्रेम, दया, ममता, त्यागादि। सात्विक तन्तुओं से विनिर्मित सांगीतिक साज–बाज, जिस पर हम आज भी है नाज, लेकिन आज का समाज लग रहा है–उड़ता–चील, गिद्ध और बाज–लड़ता हुआ कोयल और काग, मृत खग–पशुओं की बोटी–बोटी नोंचकर लाने या मैथुन–मात्र के लिए अथवा निवास, क्षेत्र, रक्षणार्थ, हिंसक, संघर्ष करता हुआ– कुत्ता, बिल्ली, बाघ, चीता, जिसके कारण मानवता– मर्यादित समाज की पुनर्स्थापनार्थ आज भी उठ रही–आवाज, दबे–कुचले लोगों को हार्दिक आवाज, क्योंकि आज का समाज लगता है

खोखला, पूर्णतः अमानवीय समाज, संवेदना– शून्य, यांत्रिक जिसके कारण भेदभाव महज प्रपंचात्मक षड्यंत्रों का अखाड़ा कुरूक्षेत्र का स्वार्थ–सिक्त जंगी मैदान ही लग रहा है। आज का समाज व्यक्तिनिष्ठता एवं स्वार्थपरता का आधारित समाज नगर में ही नहीं, अपितु गाँव–गिराँवों में भी साकार दिख रहा है। गाँवों का मानवता–संहारी–भौतिक परिवर्तन मानवीय सभ्यता–संस्कृति के विनाश की बुनियाद पर जारी है।

नागार्जुन–युगोपरान्त के कलमकशों में हिन्दी साहित्यकाश पर बुलंदी के साथ दैदीप्यमान नक्षत्रों की भाँति अडिग और प्रकाशवान कथाकार उषाकिरण खान का कथा–साहित्य भारतीय समाज, विशेषकर मिथिलांचलीय समाज का वह दर्पण है, जिसमें छठी–सातवीं सती के मध्यकालीन समाज से लेकर इक्कीसवीं शताब्दी तक के अत्याधुनिक समाज के विविध पक्षों का चित्रण उषाकिरण खान के कथा–साहित्य में किया गया है। मिथिला की मैथिली में जीवन–संघर्ष को समाए मानवता और मुक्कमल श्रृंगारिक उषाकिरण खान वस्तुतः सच्चे अर्थों में लोक–चेतना और लोकचिन्ता की प्रखर कथाकार है। अपने–आप में पूर्णतः सामाजिक सुमनों से सुरभि साहित्यक श्रृंगार है, जन–चेतना की धार है, नारीत्व की बहार हैं। इनके सम्पूर्ण कथा–साहित्य अध्यनोपरान्त ऐसा प्रतीत होता है कि लेखन का प्रस्थान–बिन्दु है–'मुक्ति'। उषा कथा–साहित्य, मुक्ति की हुंकार है। जिस प्रकार मुक्ति की तलाश में वाममंथी समालोचक मैनेजर पाण्डेय ने मार्क्सवाद के सिद्धान्तों से टकराते हैं और कहीं उसका अतिक्रमण भी करते हैं, उसी प्रकार उषा जी भी सामाजिक रूढ़ियों से, स्त्रियों के जीवन–संघर्ष को विशेष रूप से रेखांकित करने वाली कथा–साहित्य में सामाजिकता, बौद्धिकता, संवादधर्मिता और गहन लोकचिन्ता निहित है।

पत्रकार–साहित्यकार रविकान्त के साक्षात्कार–क्रम में मैनेजर पाण्डेय ने स्पष्ट लिखा है कि ''रचना की अर्थवत्ता की रचनानिष्ठ होती है, लेकिन उसकी सार्थकता समाजनिष्ठ होती है।'' उषा जी की रचना–सार्थकता भी और समाजनिष्ठ भी है, इनकी अधिकतर कहानियाँ, चाहे वे कथा–रूप में हो, अथवा उपन्यास, या फिर नाटक के रूप में, गाँव, खेत–खलिहानों, बाग–बथानों, लोक–संस्कृति के गीत–नादों और पढ़े–लिखे विद्वानों, अनपढ़ कलाकारों, चित्रकारों, कामगारों सहित विशेषकर मजदूर और किसानों, चुड़ी हारिनों आदि से जुड़ी हुई हैं। ग्रामीण माटी–पानी और पसीना से सराबोर ग्रामीण जीवन की मान्यताएँ–परम्पराएँ, उनके संस्कार– कुसंस्कार, ग्रामीण मानवीय जीवन के तमाम व्यवहार–व्यापार तथा मानवीय संस्कार के मूलाधार से जुड़ी प्रतीत होता है। है। उषाकिरण खान की कहानियाँ संवेदनात्मक ज्ञान का सहज विस्तार हैं। बहुत ही सहजता के साथ उषा जी कहानियाँ यथार्थवादी जीवन के कलात्मक अनुभवों के साथ अनुस्यूत कि है। उनकी कहानियों का फलक बहुत ही व्यापक है, जहाँ से गुजरने के बाद लगातार अनुभव होता है कि हम संवेदनाओं, रिश्तों, स्मृतियों और लोकानुभावों की अपार–अथाह दुनिया में आकर ठिठक गए हैं। उनकी कहानियाँ जीवन के अन्तर्विरोधों से होकर गुजरती है, मानवीय संवेदना की जाँच करती एक सशक्त आख्यान है। उनकी कहानियों का फ्रेमवर्क एक खास किस्म की पीड़ा, दर्द और तनाव को समेटे हुए हैं।

''अंचल के प्रति प्रेम और विश्वास ही उषा जी की कहानियों में आस्था का रसायन है और यह बाबा नागार्जुन के सान्निध्य का ही परिणाम है। यह सच है कि मिथिला में उषा जी की आत्मा निवास करती है, जिसकी परिणति कथा के रूप में होती है। उनके यहाँ मैथिली संस्कृति ही विस्तृत होकर लोक–संस्कृति का हिस्सा बन जाती है।''[1]

उषाकिरण की कहानियाँ अनुभूति से अनुभव तक की यात्रा है, जहाँ जीवन की सभी संदर्भ एक साथ मौजूद हैं। उनकी पूरी यात्रा लोकमय जीवन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि प्रकृति के प्रति चिन्ता भी इनके केन्द्र में है। 'मौसम का दर्द' कहानी में नायिका का स्वाभाविक जीवन–दर्शन प्रत्याख्यान प्रकृति के आलम्बन पर ही निर्मित है। लेखिका द्वारा सृजित यह बोध ही उनकी कहानियों में मार्मिकता, पठनीयता और स्मरणीयता का समोवश करता है। 'दूब–धान' उषा जी की सबसे चर्चित कहानी है। कहानी के पात्र 'कैतकी' के सहारे लेखिका ग्रामीण स्मृतियों में रचे बसे दिल टटोलती है। जहाँ एक ओर सामूहिक जीवन–दर्शन के प्रति आस्था है, वही दूसरी ओर गाँव की माटी की सोंधी खुशबू के प्रति लगाव का रेखांकन किया गया है। यह पूरी कहानी घर के भीतर घर का खोज है।

उषाकिरण खान की कहानियों में आधुनिक भावबोध ग्राम्य संस्कारों से होकर नया आकार लेता है। उन्होंने किस्सागोई को एक नया रूप दिया है। वे बहुत सारे कथ्य–शिल्प का प्रयोग में नहीं पड़ती है। उनकी कहानियाँ अपने पाठ के दरम्यान जीवन के अनेकशः मधुर और कड़वे अनुभवों से गुजरते हुए ऐसी तरलता उपस्थित करती है, जो सहज ही पाठक को अपने ही लगने लगती हैं। ''लोक–जीवन आँचलिकता इनकी कहानियों में बड़े ही सहज भाव से पुष्पित पल्लवित हुई है। इन दोनों के सही मिश्रण से ग्रामीण लोक–जीवन की जो मनोहारी छवियाँ उमड़ती हैं, उससे पाठक सहज ही बँध जाता है। कहानी के सहज प्रवाह के साथ अन्त तक अनायास बहता चला जाता है। कुछ कहानियों के कैनवास बड़ा होने के बावजूद इन्हें पढ़ते हुए पाठक के मन में कहीं खींच या ऊब पैदा नहीं होती।''[2] उषाकिरण खान की कहानियों की समीक्षा करते हुए रामचन्द्र तिवारी जी ने ठीक ही कहा था कि आपकी कहानियों में आँचलिकता का स्पर्श अवश्य है, किन्तु इस आँचलिकता की लोक–गंध ने आपको आधुनिक जीवन की अंधी अमानवीय व्यावसायिक दौड़ से जूझने और मनुष्यता के कोमल मासूम तत्त्वों को बचाए रखने की शक्ति प्रदान की है। आधुनिक मध्यवर्गीय समाज में सभी स्तरों पर व्याप्त घोर अमानवीयता और मूल्यहीनता के इस दौर में मनुष्यता के प्रति अटूट आस्था ही उषा किरण खान की विशिष्ट पहचान और शक्ति है।

उषाकिरण खान की कहानियाँ आत्मीयता की जमीन तैयार करती है। वे संवेदनाओं को शिनाख्त करते हुए, बहुत सहजता के साथ छोटी–छोटी घटनाओं का वर्णन करते हुए पाठक को यथार्थ के गंदले–उजले चित्र दिखाते हुए सहसा किसी जरूरी मूल्य को प्रकट कर देती हैं। उनकी पहली कहानियाँ 1978 में प्रकाशित ''आँखें स्निग्ध तरल और बहुरंगी मन' से शुरू यह यात्रा आज भी जारी है। 'जलकुंभी' की बसुधा और अनुपमा आज की स्त्री की प्रतिनिधि हैं। 'नीलकंठ' की पुनर्कला प्रेम और दाम्पत्य के द्वन्द्व में घिरी है। 'कुमुदिनी' में जीवन के विस्तार में संवेदनाओं, अनुभवों और आत्मीयता के उतार–चढ़ाव सहती हुई एकाकी रह जाती है। डॉ0 उषा किरण खान के जीवनी परक उपन्यास है, 'सिरजनहार'। 'सिरजनहार', 'महाकवि विद्यापति' के जीवन–वृत्त, जीवन–संघर्ष और जीवन–द्वन्द्व की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। आलोचक मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं। ''ऐतिहासिक चेतना और कला–चेतना का जहाँ मेल होता है, वहीं से रचना और आलोचना की शुरूआत होती है, ऐतिहासिक चेतना से रचनाकार को अपनी रचनाशीलता की सार्थकता का भी बोध होता है, इस बोध से ही रचनाकार को दृष्टि मिलती है, इसके बाद ही उसकी कला चेतना की सृजनशीलता रचना में व्यक्त होती है।''[3] उषाजी रेणु की परम्परा को समृद्ध करती हैं। ग्रामीण राजनीति का जीवन्त वर्णन मानों ऐसा है जैसा कि प्रेमचन्द और रेणु की परंपरा का आगे बढ़ा रही है। यह उपन्यास ग्रामीण समाज के भीतर बन रहे बिम्बों का यथार्थ अंकन है, जहाँ से हम भारतीय ग्रामीण परिवेश की गतिशीलता को समझ सकते हैं। ज्ञान संवर्द्धन के सभी अनुशासनों का साहित्य में रूपाकंन उषाकिरण खान के रचना–कर्म का शगल है। उषा जी साहित्यिक विद्या के सहारे इतिहास, धर्म, दर्शन और विज्ञान की सभी शाखाओं से पाठक को परिचित कराती हैं। 'भामती' उषा जी का अप्रतिम उपन्यास है, वे भामती को केन्द्र में स्थापित कर मिथिला के लोकजीवन, इतिहास–क्षेत्रीय विशेषताओं, सामाजिक– राजनैतिक जीवन के साथ ही सम्पूर्ण सांस्कृतिक विरासत को उद्घाटित करती हैं।

उषा जी के कथा–साहित्य में जिस भारतीय समाज को रेखांकित किया गया है, उसमें स्त्री–पराधीनता की दोनों ताकतों के अन्तराल में पिसती हुई नारियों का संसार है। इसमें तिरहुत का समाज का भी है, जो चित्रकार उपेन्द्र महारथी के चित्रों की भाँति गम्भीर है और आशान्वित भी, कि दोहन–शोषण–उत्पीड़न–मुक्त होगा– यह निष्कर्ष निकलता है। उनके अति चर्चित उपन्यास 'हसीना मंजिल' का कथानक लहेरी समाज से संबंधित है। दरभंगा, लहेरियासराय इस उपन्यास की पृष्ठभूमि में है। इसमें लहेरियों की कथा के साथ–साथ तमाम जातीय समाजों के विभिन्न प्रवृत्तियों का उल्लेख किया गया है। इसमें सामंतशाही, परिवार–समाज भी है और शोषित परिवार भी है। इसमें बंगालीटोला यानी बंगाली समाज भी है। राजनीतिक भी कथा–संसार का प्रमुख अवयव है। ''चाहे उपन्यास के विषय–वस्तु के संदर्भ, सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक ही क्यों न हो, उसके कथातत्त्व में राजनीति का हिस्सा प्रमुख है, उषा जी राजनैतिक चेतना सम्पन्न कलाकार है, प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में नहीं है, परन्तु परोक्ष रूप से सीधा सरोकार रखती हैं। लेखिका की राजनैतिक सक्रियता ही कथा बुनने की प्रक्रिया में राजनैतिक पक्षधरता को उजागर करती है। राजनैतिक सक्रियता जीवन्तता का प्रतीक है, जहाँ से जीवन के सभी पहलुओं को समग्रता से देखा जाता है।''[4]

'रतनारे–नयन' उपन्यास राजनीति के इन्हीं अर्थ–बिम्बों को चित्रित करता है। ''बिहार के राजनैतिक परिदृश्य पर केन्द्रित यह उपन्यास जे.पी. आन्दोलन के बाद की स्थितियों का लेखा–जोखा है। लेखिका का कथा–संसार बिहार राज्य की सामाजिक –राजनैतिक परिवेश की उपज है।''[5] आजादी के बाद लगभग सभी राजनैतिक आन्दोलन की भूमि बिहार ही रही है। उषा जी अपने जीवन संसार को कथा में पिरोती है, जिससे व्यापकता में समझने की जरूरत है। उपन्यास के राजनैतिक सक्रियता का अंकन प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि स्त्री–विमर्श के लिए नए प्रयोग द्वारा खोलता है। बिहार की सामाजिक– सांस्कृतिक संरचनाओं को रेखांकित करता यह उपन्यास अनमेल–विवाह, प्रेम–विवाह और विजातीय–विवाह जैसे अनसुलझे प्रश्नों की भी विवेचना प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास स्त्री–दृष्टि से भी पाठ की मांग करता है, क्योंकि लेखिका की घोषणा ''यह सदी मातृशक्ति की सदी है।'' लेखिका द्वन्द्व का सृजन केवल रचनात्मक स्तर पर नहीं करता, बल्कि जीवन की सम्पूर्णता से उस अनुभव को रचना में पिरोता है। 'सीमान्त कथा' उपन्यास इन्हीं मूल्यों और आदर्शों को समेकित करने का मुकम्मल प्रयास है। इस उपन्यास के पात्र वामपंथ और गाँधीवाद के वैचारिक आयामों के प्रतिनिधि हैं। उपन्यास के नायक इन्हीं दर्शनों के मूल्यों के समाज में रूपायित करने के लिए प्रयासरत हैं।

उषाजी मूलतः लोकधर्मी चेतना की नाटककार हैं। उनके नाटक–अपनी– अपनी स्थानीय विशेषताओं को समेटे हुए लोकमंच और लोक–परम्पराओं के साथ गतिशील हैं। मिथिला के प्रति अगाध प्रेम ही उनके नाट्य लेखन को यहाँ की प्रचलित जनश्रुतियों से जोड़ता है। वे लौकिक अनुभूतियों का नाट्य रूपातंरण करने में पारंगत है, उसी का प्रतिफल है, ''कहाँ गये मेरे उगना'' यह नाटक विद्यापति और मिथिला के केन्द्र में लिखा गया है, परन्तु 'उगना' मैथिल समाज के जन श्रुतियों का हिस्सा है।''[6] उषाजी नाटक को भी संवेदनशीलता के धरातल पर परखने का प्रयास करती है, वहीं संवेदनशीलता उनकी कृति में सृजन के रूप में प्रस्तुत होती है। मिथिला की संस्कृति में 'उगना' भगवान शिव का पर्याय है, जिसकी खोज इस नाटक में विद्यापति करते हैं। नाटक के दृश्यात्मक और लोक पक्ष को समेतिक रूप में प्रस्तुत करती है, जिसके बाद नाटक कई अर्थ–व्यंजनाओं से संबंध होकर नये आकार में प्रकट होता है।

'हीरा डोम' भी उषा जी के प्रसिद्ध नाटकों में से एक है। यह भी उनकी अनुभूतिजन्य सच्चाई का ही प्रतिबिम्ब है। साहित्य संवेदना का ही यथार्थ अंकन है। लेखक स्वभावतः संवेदनशील होता है, जिसके कारण वह प्रकृति के सभी अवयवों से जुड़ पाता है। उषा जी बाल–मनोविज्ञान का भी समझ रखती है, यह समझ ही उनके यहाँ साहित्य का अंग बन जाती है। उन्होंने बाल–साहित्य पर खूब लिखा है। 'डैडी बदल गये हैं, (नाटक) आदि में बाल जीवन के अनसुलझे प्रश्नों को उठाती है। समाज में परिवर्तन होता है, लेकिन परिवर्तन के मुख्य कारण स्त्री को मान तो नहीं सकते हैं, उषा जी कहती है, ''समय पर महिला कभी स्थिर नहीं रहता, जैसे 'विषतंतु' कहानी में पात्र सुलोचना कहती है मेरी प्रतिष्ठा दाँव पर है।''[7]

उषा जी कहती है, हिन्दी साहित्य में महिलाओं को अब तक समानता का अधिकार नहीं मिला है, लेकिन कहानी और कथा–साहित्य अर्थात् लेखनी के क्षेत्र में महिलाओं ने हमेशा अपनी भूमिका निभाई है। वह साहस के साथ आपनी जीवनी लिख रही है। इसके लिए उन्हें कई आलोचनाओं का सामना भी करना पड़ रहा है। महादेवी वर्मा को भी मानना था कि एक स्त्री अपने जीवन का जितना सजीव चित्रण किया है या कर सकती है, एक पुरूष–स्त्री जीवन का वैसा चित्रण नहीं कर सकता। स्त्री का अपना खुद का अनुभव होता है। एक इन्टरव्यू में उषा जी कहती है कि ''क्षेत्रीय भाषा की रचनाओं के पाठक सीमित होते हैं।''[8] उन्होंने मिथिला के समाज को मैथिल भाषा में कई रचनाएँ दी है, जिसमें भामती पहले मैथिली में ही प्रकाशित हुई फिर बाद में लेखिका हिन्दी में प्रकाशित करवाई। मैथिली भाषा में लिखना और भी कठिन होता है। उषा जी के कथा–साहित्य में स्त्री–विमर्श के उस बुलंदी को दिखाया गया है, जो यथार्थ के प्रज्वलित मशाल समाज के सामने प्रस्तुत होता है। उनका कई नाटक है, जिसका मंचन कई बार हो चुका है। कथा–शिल्प इतना दिलकश है कि पाठकों को सम्मोहित कर लेता है।

निष्कर्ष :

उषा किरण खान का कथा साहित्य सामाजिक चेतना व संवेदना से संबंधित है। कई रचनाओं में आधुनिक समाज है, तो कहीं आदिकालीन समाज। कहीं पूँजीवादी समाज है, कहीं सामंतवादी समाज है। कहीं सर्वहारा समाज का वर्णन है। कई रचनाओं में प्रेम और करूणा भी है। अपने लेखन में इन्होंने मानवीय सच को प्रमाण के तौर पर पेश किया। स्त्री–स्वर को बहुत ही सहज ढंग से उठाया गया है। समरस समाज की स्थापना तब तक संदिग्ध है, उषाकिरण खान के साहित्यकर्म के अध्ययन से समझा जा सकता है। क्रिया यानी कि 'एक्शन' ही वैयक्तिक अनुभूतियों का सामाजिक अनुभूतियों में रूपान्करण है। रूपान्तरण की यह प्रक्रिया कई स्तरों–संस्तरों से होकर गुजरती है, और इनके साहित्य में ब्राह्मण–समाज मुस्लिम समाज, बंगाली समाज, लहेरी समाज, ठठेरा समाज, नाई समाज, धोबी समाज इत्यादि।

संदर्भ सूची

1. उषा हिंडोला, (उषा किरण खान का रचना संसार), संपादक डॉ0 कुमार वरूण, प्रथम संस्करण–2019, अमन प्रकाशन, कानपुर, पृ0–12
2. वही, पृ0–162
3. उषा हिंगेला (विद्यापति को समग्रता में खोजने का प्रयास, डॉ. कमलानन्द झा), संपादक– डॉ. कुमार वरूण, प्रथम संस्करण– 2019, पृ.– 117
4. वही, पृ0–10
5. वही, पृ0–11
6. वही, पृ0–13
7. 'विषतंतु' उषाकिरण खान, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 2015, पृ0–14
8. स्त्रीकाल–इति–शरण– 31 मई 2015